4 उपेन्द्रनाथ 'अश्क'

जीवन-परिचय—प्रसिद्ध नाटककार एवं एकांकीकार उपेन्द्रनाथ 'अश्क' का जन्म 14 दिसम्बर, 1910 ई0 को जालन्धर (पंजाब) में एक मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। डी0 ए0 वी0 कॉलेज जालन्धर से बी0 ए0 करने के बाद अध्यापन और फिर लाहौर में पत्रकारिता किया। 1936 ई0 में कानून की परीक्षा में विशेष योग्यता लेकर उत्तीर्ण हुए। 1939-41 ई0 तक 'प्रीत लड़ी' के उर्दू-हिन्दी संस्करणों का सम्पादन किया। 1941-44 ई0 तक ऑल इण्डिया रेडियो दिल्ली में नाटककार और हिन्दी सलाहकार के रूप में रहे। 1944 ई0 में 'सैनिक समाचार' के हिन्दी संस्करण का सम्पादन किया। 1944-46 ई0 तक 'फिल्मिस्तान' (मुम्बई) में पटकथा और गीत लिखने के साथ-साथ अभिनय किया। 1947 ई0 में यक्ष्मा रोग से ग्रस्त होकर पंचगनी सेनेटोरियम में रहे। 1948 में रोग-मुक्त होकर इलाहाबाद (उ0 प्र0) में स्थायी निवास बनाया और पूर्ण रूप से लेखन-कार्य में जुट गये। 1951 ई0 में प्रगतिशील लेखक संघ के स्वागताध्यक्ष हुए। 1965 ई0 में केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी द्वारा सम्मानित किये गये। 1972 ई0 में 'सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार' आपको प्राप्त हुआ। 1974 ई0 में उ0 प्र0 हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'साहित्य वारिधि' की उपाधि दी गयी। 1980 ई0 में आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के मानद प्रोड्यूसर हुए। 1956-83 ई0 के बीच रूस, इंग्लैण्ड, जर्मनी, हॉलैण्ड, मॉरिशस और पाकिस्तान की यात्राएँ आपने कीं। 19 जनवरी, 1996 ई0 को आप गोलोकवासी हो गये।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—14 दिसम्बर, 1910 ई0।
- **जन्म-स्थान**—जालन्धर (पंजाब)।
- कई देशों की यात्राएँ कीं सन् 1956 से 1983 के बीच।
- **मृत्यु**—19 जनवरी, 1996 ई0।

कृतियाँ—'अश्क' जी की लेखन-शक्ति प्रौढ़ और भाव-जगत् व्यापक है। इन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, कविता, निबन्ध, संस्मरण आदि सभी क्षेत्रों में विपुल साहित्य का निर्माण किया है किन्तु इनकी उपलब्धि नाटक, एकांकी, उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में विशेष महत्त्वपूर्ण है। नाटक के प्रति आपकी रुचि बचपन से ही थी। 'अश्क' जी के लगभग 11 नाटक और 40 एकांकी प्रकाशित हो चुके हैं। इनके नाटकों में 'बड़े खिलाड़ी', 'अंजो दीदी', 'अलग-अलग रास्ते', 'जय-पराजय', 'आदि मार्ग', 'पैंतरे', 'छठा बेटा', 'स्वर्ग की झलक', 'भँवर', 'अन्धी गली', 'मेरा नाम बिएट्रिस है' आदि हैं।

आपकी प्रमुख एकांकियों में 'पर्दा उठाओ : पर्दा गिराओ', 'चरवाहे', 'तौलिये', 'चिलमन', 'कइसा साब : कइसी आया', 'मैमूना', 'मस्केबाजी का स्वर्ग', 'कस्बे का क्रिकेट क्लब का उद्घाटन', 'सूखी डाली', 'चुम्बक', 'अधिकार का रक्षक', 'तूफान से पहले', 'लक्ष्मी का स्वागत', 'किसकी बात', 'पापी', 'दो कैप्टन', 'गुंजलक', 'नानक इस संसार में……' आदि हैं।

साहित्यिक अवदान—'अश्क' जी ने मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण बड़ी सूक्ष्मता से किया है। सामाजिक और व्यक्तिगत दुर्बलताओं पर प्रहार करनेवाले व्यंग्य और प्रहसन एकांकी भी लिखे हैं। इनमें चरित्र-चित्रण की मनोवैज्ञानिक गहराई रहती है।

रंगमंच की दृष्टि से अश्क जी के एकांकी बहुत सफल हैं। वे प्रायः जीवन की अति साधारण और परिचित समस्याओं-घटनाओं पर निर्मित होते हैं और बिना कल्पना का सहारा लिये ही मन में उतर जाते हैं। इनके संवाद आडम्बरहीन, चुस्त और सहज होते हैं। उनमें बोलचाल की सहजता, प्रवाह, आंचलिकता और पात्र की अनुकूलता रहती है।

हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में अश्क जी ने कहा था कि *"मैं 1926 से 1946 ई0 तक लगभग 20 वर्ष उर्दू में लिखता रहा हूँ। जब 1933-34 ई0 में मैंने उर्दू के साथ-साथ हिन्दी में भी लिखना शुरू किया तो मुझे भाषा का कोई ज्ञान नहीं था। 1947 ई0 तक तो मैं अपनी रचनाओं के पहले मसौदे उर्दू ही में तैयार करता रहा–विशेषकर कहानियों और एकांकियों में।"*

लक्ष्मी का स्वागत

पात्र-परिचय

रौशन	:	एक शिक्षित युवक
सुरेन्द्र	:	उसका मित्र
भाषी	:	उसका छोटा भाई
पिता	:	रौशन का बाप
माँ	:	रौशन की माता
अरुण	:	रौशन का बीमार बच्चा
डॉक्टर		

स्थान

जिला जालन्धर के इलाके में मध्यम श्रेणी के एक मकान का दालान

समय

नौ-दस बजे सुबह

(दालान में सामने की दीवार से मेज लगी है, जिसके इस ओर एक पुरानी कुर्सी पड़ी है; मेज पर बच्चों की किताबें बिखरी पड़ी हैं। दीवार के दायें कोने में एक खिड़की है, जिस पर मामूली छींट का पर्दा लगा है; बायें कोने में एक दरवाजा है, जो सीढ़ियों में खुलता है। दायीं दीवार में एक दरवाजा है, जो उस कमरे में खुलता है, जहाँ इस समय रौशन का बच्चा अरुण बीमार पड़ा है। दीवारों पर बिना फ्रेम की सस्ती तस्वीरें कीलों से जड़ी हुई हैं। छत पर कागज का एक पुराना फानूस लटक रहा है। पर्दा उठने पर सुरेन्द्र खिड़की से बाहर की ओर देख रहा है। बाहर मूसलधार वर्षा हो रही है।)

(हवा की सायँ-सायँ और वर्षा के थपेड़े सुनायी देते हैं। कुछ क्षण बाद वह खिड़की का पर्दा छोड़कर कमरे में घूमता है। फिर जाकर खिड़की के पास खड़ा हो जाता है और पर्दा हटाकर बाहर देखता है। बीमार के कमरे से रौशनलाल प्रवेश करता है।)

रौशन : (दरवाजे को धीरे से बन्द करके) डॉक्टर अभी नहीं आया?

सुरेन्द्र : नहीं।

रौशन : वर्षा हो रही है?

सुरेन्द्र : मूसलधार! जल-थल एक हो रहे हैं।

रौशन : शायद ओले पड़ रहे हैं।

सुरेन्द्र : हाँ, ओले भी पड़ रहे हैं।

रौशन : भाषी पहुँच गया होगा?

सुरेन्द्र : हाँ, पहुँच ही गया होगा! यह वर्षा और ओले! नदियाँ बह रही होंगी बाजारों में।

रौशन : पर अब तक आ जाना चाहिए था उन्हें। (स्वयं बढ़कर खिड़की के पर्दे को हटाकर देखता है, फिर पर्दा छोड़कर वापस आ जाता है— घुटे-घुटे स्वर में) अरुण की तबीयत गिर रही है।

सुरेन्द्र : (चुप)।

रौशन : (उसी आवाज में) उसकी साँस जैसे हर घड़ी रुकती जा रही है; उसका गला जैसे बन्द होता जा रहा है; उसकी आँखें खुली हैं, पर वह कुछ कह नहीं सकता; बेहोश-सा, असहाय-सा, चुपचाप टुकुर-टुकुर तक रहा है। आँखें लाल और शरीर गर्म। सुरेन्द्र, जब वह साँस लेता है तो उसे बड़ा ही कष्ट होता है। (दीर्घ निःश्वास छोड़ता है।) क्या होने को है सुरेन्द्र?

सुरेन्द्र : हौसला करो! अभी डॉक्टर आ जायगा। देखो, दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी है।

(दोनों कुछ क्षण तक सुनते हैं। हवा की सायँ-सायँ।)

रौशन : नहीं, कोई नहीं, हवा है।

सुरेन्द्र : (सुनकर) यह देखो, फिर किसी ने दस्तक दी!

(रौशन बढ़कर खिड़की से देखता है, फिर वापस आ जाता है।)

रौशन : सामने के मकान का दरवाजा खटखटाया जा रहा है।

(बेचैनी से कमरे में घूमता है। सुरेन्द्र कुर्सी से पीठ लगाये छत पर हिलते हुए फानूस को देख रहा है।)

रौशन : (घूमते हुए जैसे अपने-आप) यह मामूली ज्वर नहीं; गले का कष्ट साधारण नहीं……(सहसा सुरेन्द्र के पास रुककर) मेरा दिल डर रहा है सुरेन्द्र, कहीं अपनी माँ की तरह अरुण भी मुझे धोखा न दे जायगा? (गला भर आता है) तुमने उसे नहीं देखा, साँस लेने में उसे कितना कष्ट हो रहा है।

(हवा की सायँ-सायँ और वर्षा के थपेड़े।)

रौशन : यह वर्षा, यह आँधी, ये मेरे मन में हौल पैदा कर रहे हैं। कुछ अनिष्ट होने को है। प्रकृति का यह भयानक खेल, मौत की आवाजें……

(बिजली जोर से कड़क उठती है। बादल गरजते हैं और मकानों के किवाड़ खड़खड़ा उठते हैं।)

माँ : (रसोईघर से) रौशी, दरवाजा खोल आओ। देखो, शायद डॉक्टर आया है।

(रौशन सुरेन्द्र की ओर देखता है।)

सुरेन्द्र : मैं जाता हूँ अभी।

(तेजी से जाता है। रौशन बेचैनी से कमरे में घूमता है। सुरेन्द्र के साथ डॉक्टर और भाषी प्रवेश करते हैं। भाषी के हाथ में इंजेक्शन का सामान है।)

डॉक्टर : क्या हाल है बच्चे का?

(बरसाती उतारकर खूँटी पर टाँगता है और रूमाल से मुँह पोंछता है।)

रौशन : आपको भाषी ने बताया होगा डॉक्टर साहब! मेरा तो जैसे हौसला टूट रहा है। कल सुबह उसे कुछ ज्वर हुआ, साँस कुछ कष्ट से आने लगी, लेकिन आज तो वह अचेत-सा पड़ा, जैसे अन्तिम साँसों को जाने से रोक रखने की भरसक कोशिश कर रहा है।

डॉक्टर : चलो, देखता हूँ।

(सब बीमार के कमरे में चले जाते हैं। बाहर दरवाजे के खटखटाने की आवाज आती है। माँ तेजी से प्रवेश करती है।)

माँ : भाषी! भाषी!

(बीमार के कमरे से भाषी आता है।)

माँ : देखो भाषी, बाहर कौन दरवाजा खटखटा रहा है। (आँखों में चमक आ जाती है) मेरा तो ख्याल है वही लोग आये हैं। मैंने रसोईघर की खिड़की से देखा है। टपकते हुए छाते लिये और बरसातियाँ पहने……

भाषी : वह कौन?

माँ : वही, जो सरला के मरने पर अपनी लड़की के लिए कह रहे थे। बड़े भले आदमी हैं। सुनती हूँ, सियालकोट में उनका बड़ा काम है। इतनी वर्षा में भी·····

(जोर-जोर से कुण्डी खटखटाने की निरन्तर आवाज! भाषी भागकर जाता है, माँ खिड़की में जा खड़ी होती है। बीमार के कमरे का दरवाजा खुलता है, सुरेन्द्र तेजी से प्रवेश करता है।)

सुरेन्द्र : भाषी कहाँ है?

माँ : बाहर कोई आया है, कुण्डी खोलने गया है।

(फिर तेजी से वापस चला गया है। माँ एक बार पर्दा उठाकर खिड़की से झाँकती है, फिर खुशी-खुशी कमरे में टहलती है। भाषी प्रवेश करता है।)

माँ : कौन है?

भाषी : शायद वही हैं। नीचे बैठा आया हूँ, पिता जी के पास, तुम चलो।

माँ : क्यों?

भाषी : उनके साथ एक औरत भी है।

(माँ जल्दी-जल्दी चली जाती है। सुरेन्द्र कमरे का दरवाजा जरा-सा खोलकर देखता है और आवाज देता है·····)

सुरेन्द्र : भाषी!

भाषी : हाँ!

सुरेन्द्र : इधर आओ!

(भाषी कमरे में चला जाता है। कुछ क्षण के लिए मौन छा जाता है। केवल बाहर मेह बरसने और हवा के थपेड़ों से किवाड़ों के खड़खड़ाने का शोर कमरे में आता है। हवा से फानूस सरसराता है। कुछ समय बाद डॉक्टर, सुरेन्द्र, रौशन और भाषी बाहर आते हैं।)

रौशन : अब बताइये डॉक्टर साहब!

डॉक्टर : (अत्यधिक गम्भीरता से) बच्चे की हालत नाजुक है।

रौशन : बहुत नाजुक है?

डॉक्टर : हाँ!

रौशन : कुछ नहीं हो सकता?

डॉक्टर : भगवान् के घर कुछ कमी नहीं, पर आपने बहुत देर कर दी। डिप्थीरिया[1] में फौरन डॉक्टर को बुलाना चाहिए।

रौशन : हमें मालूम नहीं हुआ डॉक्टर साहब। कुछ साँझ को इसे ज्वर हो आया, गले में भी तकलीफ महसूस हुई। मैं डॉक्टर जीवाराम के पास ले गया—वही, जो हमारे बाजार में हैं—उन्होंने गले में आयोडीन-ग्लिसरीन पेण्ट कर दी और फीवर-मिक्सचर बना दिया। दो खुराकें दीं, इसकी हालत तो पहले से भी खराब हो गयी। शाम को यह कुछ अचेत-सा हो गया। मैं भागा-भागा आपके पास गया, पर आप मिले नहीं, तब रात को भाषी को भेजा, फिर भी आप न मिले और फिर यह झड़ी लग गयी—ओले, आँधी और झक्कड़! जैसे प्रलय के बन्धन ढीले हो गये हों।

(बाहर हवा की सायँ-सायँ सुनायी देती है। डॉक्टर सिर नीचा किये खड़ा है। रौशन उत्सुक दृष्टि से उनकी ओर ताक रहा है। सुरेन्द्र मेज के एक कोने पर बैठा छत की ओर, जोर-जोर से हिलते फानूस को देख रहा है।)

---

1. डिप्थीरिया—गले का संक्रामक रोग जिसमें साँस बन्द हो जाने से मृत्यु हो जाती है।

डॉक्टर : (सर उठाता है) मैंने इंजेक्शन दे दिया है। भाषी ने जो लक्षण बताये थे, उन्हें सुनकर मैं बचाव के तौर पर इंजेक्शन का सामान ले आया था और मेरा ख्याल ठीक निकला। भाषी को मेरे साथ भेज दो, मैं इसे नुस्खा लिख देता हूँ, यहीं बाजार से दवाई बनवा लेना, मेरी जगह तो दूर है। पन्द्रह-पन्द्रह मिनट के बाद गले में दवाई की दो-चार बूँदें और एक घण्टे में मुझे सूचित करना। यदि एक घण्टे तक यह ठीक रहा तो मैं एक इंजेक्शन और दे जाऊँगा। कोई दूसरा इलाज भी तो नहीं।

रौशन : (आवाज भर आती है) डॉक्टर साहब!

डॉक्टर : घबराने से काम न चलेगा, सावधानी से उसकी देखभाल करो, शायद……

रौशन : मैं अपनी ओर से कोई कसर न उठा रखूँगा डॉक्टर……! सुरेन्द्र, देखो तुम मेरे पास रहना, जाना नहीं। यह घर इस बच्चे के लिए वीराना है। ये लोग इसका जीवन नहीं चाहते, बड़ा रिश्ता पाने के लिए रास्ते में इसे रोड़ा समझते हैं। इसकी मौत चाहते हैं……

सुरेन्द्र : क्या कहते हो रौशन……

डॉक्टर : रौशनलाल……

रौशन : आप नहीं जानते डॉक्टर साहब, ये सब लोग पत्थर-दिल हैं! आपको मालूम नहीं—इधर मैं अपनी पत्नी का दाह-कर्म करके लौटा था, उधर ये दूसरी जगह शादी के लिए शगुन लेने की सोच रहे थे।

सुरेन्द्र : यह तो दुनिया की रीत है भाई!

रौशन : दुनिया की रीत—इतनी निष्ठुर, इतनी निर्मम, इतनी क्रूर? नहीं जानती कि जो मर जाती है, वह भी किसी की लड़की होती है, किसी के लाड़-प्यार में पली होती है, फिर……(डॉक्टर को जाते देखकर) आप जा रहे हैं डॉक्टर साहब! (भाषी से) देखो भाषी, जल्दी आना बस, जैसे यहीं खड़े हो।

(डॉक्टर और भाषी चले जाते हैं।)

रौशन : सुरेन्द्र, क्या होने को है? क्या अरुण भी मुझे सरला की तरह दगा दे जायगा! मैं तो उसे देखकर सरला का दुःख भूल चुका था लेकिन अब……अब……(हाथों से चेहरा छिपा लेता है।)

सुरेन्द्र : (सुरेन्द्र उसे धकेलकर कमरे की ओर ले जाता हुआ) पागल न बनो, चलो, उसके घर में क्या कमी है? वह चाहे तो मुर्दों में जान आ जाय! मरणासन्न उठ खड़े हों।

रौशन : (भर्राये गले से) मुझे उस पर कोई विश्वास नहीं रहा। उसका कोई भरोसा नहीं—निर्मम और क्रूर! उसका काम सताये हुओं को और सताना है, जले हुओं को और जलाना है।

सुरेन्द्र : दीवाने न बनो, चलो, उसके सिरहाने चलकर बैठो! मैं देखता हूँ, भाषी अभी क्यों नहीं आया।

(उसे दरवाजे के अन्दर धकेलकर मुड़ता है। दायीं ओर के दरवाजे से माँ प्रवेश करती है।)

माँ : किधर चले?

सुरेन्द्र : जरा भाषी को देखने जा रहा था।

माँ : क्या हाल है अरुण का?

सुरेन्द्र : उसकी हालत खराब हो रही है।

माँ : हमने तो बाबा, बोलना ही छोड़ दिया है। ये डॉक्टर जो न करें, थोड़ा है। बहू के मामले में तो यही बात हुई थी। अच्छी-भली हकीम की दवा चल रही थी। आराम हो रहा था। जिगर का बुखार ही तो था, दो-दो बरस भी रहता है, पर यह डॉक्टरों को लाये बिना न माना और उन्होंने दे दिया दवा का फतवा! हमने तो भई इसीलिए कुछ कहना-सुनना ही छोड़ दिया है। आखिर मैंने भी तो पाँच-पाँच बच्चे पाले हैं। बीमारियाँ हुईं, कष्ट हुए, कभी डॉक्टरों के पीछे भागी-भागी नहीं फिरी। क्या बताया डॉक्टर ने?

सुरेन्द्र : डिप्थीरिया।

माँ : क्या!

सुरेन्द्र : बड़ी भयानक बीमारी है माँ जी! अच्छा-भला आदमी चन्द घण्टों के अन्दर खत्म हो जाता है।

माँ : राम-राम! तुम लोगों ने क्या कुछ-का-कुछ बना डाला। उसे जरा ज्वर है, छाती जम गयी होगी, बस, मैं घुट्टी दे देती तो ठीक हो जाता, पर मुझे कोई हाथ लगाने दे तब न! हमें तो वह कहता है, बच्चे से प्यार ही नहीं।

सुरेन्द्र : नहीं-नहीं, यह कैसे हो सकता है! आपसे ज्यादा वह किसे प्यारा होगा!

(चलने को उद्यत होता है।)

माँ : सुनो!

(सुरेन्द्र रुक जाता है)

माँ : मैं तुमसे एक बात करने आयी थी, तुम उसके मित्र हो न, उसे समझा सकते हो।

सुरेन्द्र : कहिये।

माँ : आज वे फिर आये हैं।

सुरेन्द्र : वे कौन?

माँ : वे सियालकोट के व्यापारी हैं। जब सरला का चौथा हुआ था तो उस दिन रौशी के लिए अपनी लड़की का शगुन लेकर आये थे। पर उसे न जाने क्या हो गया है, किसी की सुनता ही नहीं, सामने ही न आया। हारकर बेचारे चले गये। रौशी के पिता ने उन्हें एक महीने बाद आने को कहा था, सो पूरे एक महीने बाद वे आये हैं।

सुरेन्द्र : माँ जी·····

माँ : तुम जानते हो बच्चा, दुनिया जहान का यह नियम है। गिरे हुए मकान की नींव पर ही दूसरा मकान खड़ा होता है। रामप्रताप को ही देख लो, अभी दाह-कर्म-संस्कार के बाद नहाकर साफा भी न निचोड़ा था कि नकोदरवालों ने शगुन दे दिया, एक महीने के बाद ब्याह हो गया और अब तो सुनते हैं, बच्चा भी होनेवाला है।

सुरेन्द्र : माँ जी, रामप्रताप और रौशन में कुछ फर्क है।

माँ : यही न, कि वह माँ-बाप का आज्ञाकारी है और यह पढ़-लिखकर बात मेटना सीख गया है। बेटा, अभी तो चार नाते आते हैं फिर देर हो गयी तो इधर कोई मुँह भी न करेगा। लोग सौ-सौ बातें बनायेंगे, सौ-सौ लांछन लगायेंगे। और फिर कौन ऐसा क्वाँरा है·····

सुरेन्द्र : माँ जी, तुम्हारा रौशन बिन ब्याहा न रहेगा, इसका मैं विश्वास दिलाता हूँ·····

माँ : यह ठीक है बेटा, पर अब ये भले आदमी मिलते हैं, घर अच्छा है, लड़की अच्छी है, सुशील है, सुन्दर है, पढ़ी-लिखी है। और सबसे बढ़कर यह है कि ये लोग बड़े अच्छे हैं। लड़की की बड़ी बहन से अभी मैंने बातें की हैं। ऐसी सलीकेवाली है कि क्या कहूँ, बोलती है तो फूल झड़ते हैं। जिसकी बड़ी बहन ऐसी है, वह आप कैसे न अच्छी होगी!

सुरेन्द्र : माँ जी, अरुण की हालत ठीक नहीं है। जाकर देखो तो मालूम हो।

माँ : बेटा, अब ये भी इतनी दूर से आये हैं—इस आँधी और तूफान में। कैसे इन्हें निराश लौटा दें?

सुरेन्द्र : तो आखिर आप मुझसे क्या चाहती हैं?

माँ : तुम्हारा वह मित्र है, उससे जाकर कहो कि जरा दो-चार मिनट जाकर उनसे बात कर ले। जो कुछ वे पूछते हों, उन्हें बता दे, इतने में मैं लड़के के पास बैठती हूँ।

सुरेन्द्र : मुझसे यह नहीं हो सकता माँ जी! बच्चे की हालत ठीक नहीं, बल्कि चिन्ताजनक है। आप नहीं जानतीं,

वह उसे कितना प्यार करता है। भाभी के बाद उसका सब ध्यान उसी में केन्द्रित हो गया है। और इस समय, जब बच्चे की हालत खराब है, मैं उससे यह कैसे कहूँ?

(बीमार के कमरे का दरवाजा खुलता है। रौशन प्रवेश करता है—बाल बिखरे हुए, चेहरा उतरा हुआ, आँखें फटी-फटी-सी!)

रौशन : सुरेन्द्र, तुम अभी यहीं खड़े हो! भगवान् के लिए जाओ जल्दी, जाओ! मेरी बरसाती ले जाओ, नीचे से छाता ले जाओ। देखो, भाषी अभी आया क्यों नहीं! अरुण तो……

भाषी : (सीढ़ियों से) मैं आ गया भाई साहब!

(भाषी दवाई की शीशी लिये हुए आता है। सुरेन्द्र और भाषी बीमार के कमरे में आते हैं। माँ रौशन के समीप आती है।)

माँ : क्या बात है, घबराये हुए क्यों हो?

रौशन : माँ, उसे डिप्थीरिया हो गया है!

माँ : मुझे सुरेन्द्र ने बताया। (असन्तोष से सिर हिलाकर) तुम लोगों ने मिल-मिलाकर……

रौशन : क्या कह रही हो? तुम्हें खुद अगर किसी बात का पता नहीं तो दूसरों को तो कुछ करने दो।

माँ : चलो, मैं चलकर देखती हूँ। (बढ़ती है।)

रौशन : (रास्ता रोकता है) नहीं, तुम मत जाओ। उसे बेहद तकलीफ है, साँस उसे मुश्किल से आती है, उसका दम उखड़ रहा है, तुम कोई घुट्टी-बुट्टी की बात करोगी। (जाना चाहता है।)

माँ : सुनो।

(रौशन मुड़ता है। माँ असमंजस में है।)

रौशन : कहो!

माँ : (चुप)

रौशन : जल्दी कहो, मुझे जाना है।

माँ : वे फिर आये हैं।

रौशन : वे कौन?

माँ : वही सियालकोटवाले!

रौशन : (क्रोध से) उनसे कहो—जहाँ से आये हैं, वहीं चले जायँ। (जाना चाहता है।)

माँ : रौशी!

रौशन : मैं नहीं जानता, मैं पागल हूँ या आप! क्या आप लोग मेरी सूरत नहीं देखते? क्या आपको इस पर कुछ लिखा दिखायी नहीं देता? शादी, शादी, शादी! क्या शादी ही दुनिया में सब-कुछ है? घर में बच्चा मर रहा है और तुम्हें शादी की सूझ रही है। आखिर आप लोगों को हो क्या गया है? क्या वह मेरी पत्नी न थी, क्या वह……

माँ : शोर मत मचाओ! हम तुम्हारे ही लाभ की बात कर रहे हैं, रामप्रताप……

रौशन : (चीखकर) तुम रामप्रताप को मुझसे मिलाती हो! अपढ़, अशिक्षित, गँवार! उसके दिल कहाँ है? महसूस करने का माद्दा कहाँ है? वह जानवर है।

माँ : तुम्हारे पिता ने भी तो पहली पत्नी की मृत्यु के दूसरे महीने ही विवाह कर लिया था……

रौशन : वे……माँ, जाओ, मैं क्या कहने लगा था।

(तेजी से मुड़कर कमरे में चला जाता है, दरवाजा खट से बन्द कर लेता है। हाथ में हुक्का लिये हुए खँखारते-खँखारते रौशन के पिता प्रवेश करते हैं।)

पिता : क्या कहता है रौशन?

माँ : वह तो बात भी नहीं सुनता, जाने बच्चे की तबीयत बहुत खराब है।

पिता : (खँखारकर) एक दिन में ही इतनी क्या खराब हो गयी? मैं जानता हूँ, यह सब बहानेबाजी है। (जोर से आवाज देते हैं) रौशी!

(खिड़कियों पर वायु के थपेड़ों की आवाज!)

पिता : (फिर आवाज देते हैं) रौशी!

(रौशन दरवाजा खोलकर झाँकता है। चेहरा पहले से भी उतरा हुआ है। आँखें रुआँसी और निगाहों में करुणा।)

रौशन : (अत्यन्त थके स्वर से) धीरे बोलें आप, क्या शोर मचा रहे हैं!

पिता : इधर आओ!

रौशन : मेरे पास समय नहीं है!

पिता : (चीखकर) समय नहीं?

रौशन : धीरे बोलें आप!

पिता : मैं कहता हूँ, इतनी दूर से आये हैं, तुम्हें देखना चाहते हैं, तुम जाकर उनसे जरा एक-दो मिनट बात कर लो।

रौशन : मैं नहीं जा सकता!

पिता : नहीं जा सकते?

रौशन : नहीं जा सकता!

पिता : तो मैं शगुन ले रहा हूँ! इस वर्षा, आँधी और तूफान में, उन्हें अपने घर से निराश नहीं लौटा सकता। घर आयी लक्ष्मी का निरादर नहीं कर सकता।

रौशन : (रोने की तरह हँसता है।) हाँ, आप लक्ष्मी का स्वागत कीजिए। (खट से दरवाजा बन्द कर लेता है।)

पिता : (रौशन की माँ से) इस एक महीने में हमने कितनों को इनकार नहीं किया, लेकिन इनको कैसे ना कर दें? सियालकोट में इनकी बड़ी भारी फर्म है। मैंने महीने भर में अच्छी तरह पता लगा लिया है। हजारों का तो इनके यहाँ लेन-देन है।

माँ : बहू की बीमारी का पूछते होंगे?

पिता : उन्हें सन्देह था, पर मैंने कह दिया, जिगर का बुखार था, बिगड़ गया।

माँ : बच्चे को पूछते होंगे।

पिता : हाँ, पूछते थे। मैंने कह दिया कि बच्चा है, पर माँ की मृत्यु के बाद उसकी हालत ठीक नहीं रहती, परमात्मा ही मालिक है।

माँ : तो आप हाँ कर दें।

पिता : हाँ, मैं तो शगुन ले लूँगा।

(चले जाते हैं। हुक्के की आवाज दूर होते-होते गुम हो जाती है। माँ खुशी-खुशी कमरे में घूमती है। भाषी आता है और तेजी से निकल जाता है।)

माँ : भाषी!

पिता : मैं डॉक्टर के यहाँ जा रहा हूँ।

(तेजी से चला जाता है। बीमार के कमरे से सुरेन्द्र निकलता है।)

सुरेन्द्र : (भरी हुई आवाज में) माँ जी……

माँ : (घबराये स्वर में) क्या बात है? क्या बात है?

सुरेन्द्र : दाने लाओ और दीये का प्रबन्ध करो।
माँ : क्या?
(आँखें फाड़े उसकी ओर देखती रह जाती है—हवा की सायँ-सायँ।)
सुरेन्द्र : अरुण इस संसार से जा रहा है।
(फानूस टूटकर धरती पर गिर पड़ता है। माँ भागकर दरवाजे पर जाती है।)
माँ : रौशी, रौशी।
(दरवाजा अन्दर से बन्द है।)
माँ : रौशी, रौशी!
रौशन : (कमरे के अन्दर से भर्राये हुए स्वर में) क्या बात है?
माँ : दरवाजा खोलो!
रौशन : तुम लक्ष्मी का स्वागत कर आओ!
माँ : रौशी·····
रौशन : (चुप)
माँ : रौशी!
(सीढ़ियों से रौशन के पिता के हुक्का पीने और खँखारने की आवाज आती है।)
पिता : (सीढ़ियों से ही) रौशन की माँ, बधाई हो!
(पिता का प्रवेश! माँ उनकी ओर मुड़ती है।)
पिता : बधाई हो, मैंने शगुन ले लिया।
(कमरे का दरवाजा खुलता है, मृत बालक का शव लिये रौशन आता है।)
रौशन : हाँ, नाचो, गाओ, खुशियाँ मनाओ!
पिता : हैं। मर गया!! हाथ से हुक्का गिर पड़ता है और मुँह खुला रह जाता है।)
माँ : मेरा लाल! (चीख मारकर सिर थामे धम से बैठ जाती है।)
सुरेन्द्र : माँ जी, जाकर दाने लाओ और दीये का प्रबन्ध करो।

(पर्दा)

अभ्यास प्रश्न

● समीक्षात्मक प्रश्न

1. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की कथावस्तु या कथानक लिखिए।

अथवा

'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का सारांश (कथा-सार) अपने शब्दों में लिखिए।

2. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

"रौशन एक भावुक पिता और स्नेही पति है।" इस कथन के आधार पर रौशन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

रौशन के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

3. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की एकमात्र महिला पात्र रौशन की माँ का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. 'लक्ष्मी का स्वागत' एक भावनाप्रधान मर्मस्पर्शी एकांकी है। इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

5. अभिनेयता की दृष्टि से 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की समीक्षा कीजिए।
6. पठित एकांकी के प्रकाश में उपेन्द्रनाथ 'अश्क' के एकांकी नाटकों की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
7. सुरेन्द्र तथा भाषी की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
8. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की विशेषताएँ कथा-संगठन के विकास को दृष्टिगत रखते हुए लिखिए।
9. एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की समीक्षा कीजिए।
10. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी में किस पात्र का चरित्र आपकी दृष्टि से अधिक अच्छा है? उसके चारित्रिक गुणों को अपने शब्दों में लिखिए।
11. उपेन्द्रनाथ 'अश्क' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख कीजिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के शीर्षक की उपयुक्तता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
2. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का उद्देश्य क्या है? एकांकीकार को इसकी पूर्ति में कहाँ तक सफलता प्राप्त हुई है? अपने शब्दों में लिखिए।
3. क्या आप रौशन के विचारों से सहमत हैं? यदि नहीं तो क्यों? तर्क सहित उत्तर लिखिए।
4. भाषी के चरित्र की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।
5. यदि आप रौशन होते तो उसकी जगह क्या करते? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।
6. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के आधार पर रौशन के पिता से सम्बन्धित दस वाक्य लिखिए।

● वस्तुनिष्ठ प्रश्न

सही उत्तर के सम्मुख सही (✓) का चिह्न लगाइये—

1. **रौशन के पुत्र को कौन-सा रोग था—**
   (अ) पीलिया ( )
   (ब) डिप्थीरिया ( )
   (स) मलेरिया ( )
2. **रौशन के माता-पिता उसकी दूसरी शादी इसलिए करना चाहते थे, क्योंकि—**
   (अ) अरुण की परवरिश ठीक से हो सके। ( )
   (ब) उन्हें दहेज का लालच था। ( )
   (स) उनके कुल की यह रीति थी। ( )
3. **रौशन के पुनर्विवाह का शगुन लिया था—**
   (अ) माँ ने ( )
   (ब) पिता ने ( )
   (स) स्वयं रौशन ने ( )
4. **रौशन की माँ के आग्रह करने पर भी सुरेन्द्र रौशन से उसके पुनर्विवाह की बात नहीं करता; क्योंकि—**
   (अ) वह अरुण की बीमारी से रौशन का दुःख समझता था। ( )
   (ब) वह अपना विवाह करना चाहता था। ( )
   (स) वह रौशन का पुनर्विवाह नहीं चाहता था। ( )

● आन्तरिक मूल्यांकन

1. "दहेज एक अभिशाप है" इस शीर्षक के आधार पर उसके पक्ष एवं विपक्ष में तर्क दीजिए।
2. दहेज रोकने के लिए आप क्या-क्या करेंगे? तालिका द्वारा दर्शाइए।

❖